❋ चतुर्थ अध्याय ❋

साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित समस्याएँ

❋ चतुर्थ अध्याय ❋

साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित समस्याएँ

प्रस्तावना :

आज वैज्ञानिक युग में मनुष्य का जीवन संघर्षमय हो रहा है। संसार का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ पर समस्या न हो। डॉ.सीलम वेंकटेश्वर राव के मतानुसार ''शरीर और छाया,आत्मा एवं शरीर का जो नित्य एवं शाश्वत संबंध है वहीं संबंध समस्या एवं मनुष्य जीवन का है।''[1] अर्थात मनुष्य के जीवन में प्रति दिन समस्याएँ निर्माण होती हैं और उन्हें सुलझाने के लिए वह दिन-रात व्यस्त रहता हैं।

मनुष्य का जीवन हर समय समस्या में उलझा रहता है। वह अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं से जूझता हुआ जन्म से मृत्यु तक मकड़ी के समान उलझता हुआ गुजरता है। आज के युग में मनुष्य का जीवन कुंठा, अवसाद और निराशा से भरा है उसकी सबसे पहली समस्या अन्न, वस्त्र, निवारा है लेकिन वर्तमान युग में समस्याएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। क्योंकि मनुष्य अपने कर्तव्यों से परिचित नहीं है बल्कि अपने अधिकारों का उपयोग करना चाहता है। जीवन की जटिलताएँ, कठिनाइयाँ तथा समस्याएँ निरंतर बढ़ती रही है। इसलिए आज मनुष्य का जीवन ही स्वयं एक 'समस्या' बन गया है।

साहित्य की बुनियाद ही 'मानव जीवन' है युगानुरूप कालानुरूप, समस्यानुरूप बदलता मनुष्य जीवन साहित्य चित्रित करता है इसलिए साहित्य से सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कोई भी परिस्थिति अछूती नहीं रही क्योंकि मनुष्य की पीड़ा, आंतरिक भावना, संवेदना इन्हें रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से मर्मस्पर्शी वाणी देता हैं। वर्तमान जीवन विविध समस्याओं से घिरा हुआ है। इनका अंकन भी हमारे आधुनिक रचनाकारों ने सक्षमता से किया है। यही समस्या एक उलझन एवं कठिन अवसर या प्रसंग है जिसे जानने के लिए व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है।

4.1 समस्या : अर्थ :

चित्रकाव्य के सात भेदों में से 'समस्या' भेद एक है इसका लक्षण निरूपित करते हुए पुराणकार ने कहा है -

''सुशिलष्टपद्यमेंक यव्नानाश्लोकोश निर्मितम
सा समस्या परस्याऽऽ त्मपस्योः कृति संकटात् ''[2]

संस्कृताचार्यों ने समस्या का केवल यही अर्थ लगाया है कि 'समस्या' वह है जिसमें अपनी एवं दूसरे की रचना का संगठन अथवा समन्वय हुआ हो किंतु आधुनिक युग में समस्या का स्वरूप परिवर्तित होता गया और अब उसका अर्थ केवल कठिन वस्तु से लिया गया प्रतीत होता है, पर साथ ही साथ किसी भी कठिन से कठिन प्रश्न का उत्तर संभव एवं असंभव सभी प्रकार के व्यापार के माध्यम से दे देना भी लक्ष्य रहा है।''[3]

4.2 समस्या : परिभाषा :

डॉ.सीलन वेंकटेश्वर राव के मतानुसार ''चेतना के स्तर पर जब परिस्थितियाँ विषम होकर उलझ जाती हैं, तो स्वयंमेव समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसकी स्थिति सहज होती है जो मनुष्य को संघर्ष के लिए प्रेरित करता है।[3]

तात्पर्य - मनुष्य के जीवन में परस्पर विरोधी परिस्थितियाँ निर्माण होने के कारण जो संघर्ष निर्माण होता है उसे समस्या कहते है।

इस प्रकार मनुष्य के जीवन में सामाजिक समस्या, आर्थिक समस्या, पारिवारिक समस्या, धार्मिक समस्या, शारीरिक समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्या आदि का समावेश होता है। इन्हीं समस्याओं का चित्रण साधुराम दर्शक ने अपनी कहानियों में किया है।

साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित समस्याएँ निम्नलिखित हैं -

4.3 वैवाहिक समस्या

4.3.1 अनमेल विवाह की समस्या

4.3.2 पुनर्विवाह की समस्या

4.3.3 आंतरजातीय विवाह की समस्या

4.3.4 युवती के क्रय-विक्रय की कुप्रथा की समस्या

4.4 पारिवारिक समस्या

4.4.1 आर्थिक समस्या

4.4.2 बेकारी की समस्या

4.4.3 आवास की समस्या

4.5 नारी की समस्या

4.5.1 दहेज की समस्या

4.5.2 प्रेम की समस्या

4.5.3 बलात्कार की समस्या

4.5.4 विधवा की समस्या

4.5.5 वेश्या की समस्या

4.6 सामाजिक समस्या

4.6.1 अंधविश्वास की समस्या

4.6.2 धार्मिक समस्या

4.6.3 भ्रष्टाचार की समस्या

4.6.4 शोषण की समस्या

4.3. वैवाहिक समस्या :

भारतीय संस्कृति में विवाह एक नैतिक बंधन है। धार्मिक पवित्रता के साथ इसे जोड़ा गया है। विवाह एक सामाजिक बंधन है, साथ ही दो परिवार तथा दो हृदया का मिलन हैं। विवाह स्त्री और पुरूष दोनों के मानसिक, शारीरिक विकास का साधन है। प्रत्येक देश और जाति में लोग अपने-अपने आचार-विचार से विवाह संपन्न करते हैं। विवाह में सहज तथा स्वाभाविकता होती है जिससे मनुष्य के जीवन को स्थिरता प्राप्त होती है।

श्री वेस्टर मार्क का कथन है - ''विवाह एक या अधिक पुरूषों का एक या अधिक स्त्रियों के साथ होनेवाला इस प्रकार का संबंध है जिसे प्रथा का कानून स्वीकार करता है और इसमें विवाह करनेवाले व्यक्ति के और उनसे उत्पन्न सम्मिलित बच्चों के बीच एक दूसरे के प्रति होनेवाले अधिकारों और कर्तव्यों का

समावेश होता है।''[5] अर्थात 'विवाह' समाज मान्य प्रथा है, जिससे स्त्री-पुरूष के यौनसंबंधों को नियंत्रित करती है। विवाह संस्था के द्वारा परिवार की निर्मिति होती है और बच्चों का पालन-पोषण भी होता है।

समाज में पुरूष की अपेक्षा अविवाहित नारी को तुच्छता से देखा जाता है। इसलिए समाज में अविवाहित पुरूष से अविवाहित नारी की समस्या अधिक प्रबल रही है। विवाह की समस्या जीवन की महत्त्वपूर्ण समस्या है। भारतीय समाज में नारी की भूमिका विशेष महत्त्वपूर्ण मानी नहीं गई है। आज भी समाज में नारी की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। अतः हमारे समाज में पुरूषों से कई ज्यादा स्त्रियों पर अन्याय, अत्याचार होते हैं।

वैवाहिक जीवन की कुप्रथाओं के कारण कन्या का विवाह माता-पिता के लिए कितनी जटिल समस्या हो जाती है। इसका चित्रण साधुराम दर्शक की 'धारा बहती रही', 'डायरी के कुछ पन्ने', 'डायन', 'एक वीतरागी के नोटस्', 'कंकाल हँसता है', 'पर कटी तितली', 'जागो', 'समय के चरण', 'चंद्र किरण', 'खुशी भरा दिन', 'उदास पीला गुलाब' आदि कहानियों में चित्रित हुई हैं।

4.3.1 अनमेल विवाह की समस्या :

भारतीय परिवार में नारी सभी प्रकार की रूढ़ियाँ, प्रथाएँ, परंपराएँ, बुराइयाँ आदि से आबद्ध होती रही है। पारंपरिक विवाह के नाम पर पति के अत्याचार, पापाचार, व्यभिचार और सामाजिक सदस्यों द्वारा किए जाने वाले शोषण का उद्घाटन लेखक ने मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। इसमें 'खुशी भरा दिन', 'पर कटी तितली', 'खलनायक' आदि कहानियों का समावेश हैं।

भारतीय समाज में कन्या की बढ़ती आयु को देखकर गली-गली, घर-घर में चर्चाएँ शुरू होती है और दहेज न दे सकने के कारण कन्या के माता-पिता विवश होकर अपनी कन्या को बूड्ढ़े के मत्थे मढ़ते है अन्यथा घर की परिस्थिति और लोगों के ताने सुनकर लड़की खुद ही विवाह का निर्णय लेकर बूढे से विवाह करती है तथा अपनी स्वाभाविक इच्छाओं की बलि चढ़ाती है।

'खुशी भरा दिन' कहानी में लेखक कहता है - ''नीलू ने साठ साल

के विदूर लखपति ठेकेदार से शादी कर ली है। सुनकर पत्थर ही तो बन गया था वह मानो अपने किसी बहुत प्रिय की मृत्यु का समाचार सुन लिया हो। मृत्यु ही तो हो गयी थी नीलू की।''[5] अर्थात लड़की अपने परिवार की आर्थिक स्थिति देखकर अनिच्छा से विवाह करती और जीवन भर घुटती रहती है।

'पर कटी तितली' कहानी में ज्योति का विवाह उससे दस साल बड़े अनपढ़ लड़के से जबर्दस्ती तय किया जाता है। ज्योति के पिताजी लड़कियों को पढ़ाने के विरोध में है। परिणामतः ज्योति को विवाह के लिए मान्यता देनी पड़ती है। लेकिन विवाह के बाद ज्योति पर उसके ससुराल वाले अन्याय-अत्याचार करते है। एक दिन अपने पढ़ने-लिखने का शौक पूरा करने के लिए पत्रशैली में कहानी लिखती है। इसी बात को लेकर उसका पति ज्योति पर शक करता है कि उसने अपने प्रेमी को ही खत लिखा है और इसी बहाने से उसे इतना पीटता है कि उसके शरीर पर काले-नीले निशान पड़ जाते है। इतना ही नही अशोक की माँ ज्योति के पागल होने पर उसके ससुराल वालों को कहती है - ''बेहद जाहिल, मलिन और कंजुष लोगों के पल्ले पड़ी है बेचारी ! कोई चार साल पहले पहली कुड़ी (बेटी) हो गयी थी तो घर में ऐसा मातम छा गया था, जैसे पैदाइश नहीं मौत हुई हो।'' जालिमों ने ठीक से खाने-पीने को ही नहीं दिया।''[7] अर्थात जब भी अनमेल विवाह होता है, सहना तो नारी को पड़ता है।

तात्पर्य - नारी मुक्ति के इतने संघर्ष के बाद भी आज बीसवीं सदी में भी नारी स्वतंत्र नहीं हुई हैं। आज भी लड़की को जीवन साथी का चुनाव करने का अधिकार नहीं हैं वह चुनाव माता-पिता ही करते हैं। पिता के ऐसे, जबरदस्ती के निर्णय से ही बेटी की जिंदगी बरबाद होती हैं। जैसे की 'पर कटी तितली' कहानी की ज्योति की जिन्दगी पिता के एक गलत निर्णय के कारण दाँव पर लगती है। परिणामस्वरूप लेखक ने अनमेल विवाह से घुटती, पीसती नारी का यथार्थ चित्रण किया है।

4.3.2 पुनर्विवाह की समस्या :

पुनर्विवाह से तात्पर्य है एक पुरूष एक पत्नी के जीवित होते हुए अथवा मरने के बाद दूसरी स्त्री से विवाह करता है। आज के युग में किसी भी

कारण से विवाह टूट जाते हैं और दूसरे विवाह की तैय्यारियाँ शुरू होती हैं।

'चन्द्रकिरण' कहानी में नरेन्द्र 'चन्द्र' के गँवारूपन तथा कुरूपता को देखकर तलाक लिए बिना चन्द्र को छोड़कर दूसरा विवाह करता है। लेकिन फैशनेबल पत्नी के नखरे तथा घर की जिम्मेदारियाँ आदि पर ही उसका सारा वेतन खर्च होता है। घर की आर्थिक कठिनाईयाँ बढ़ने के कारण घर में रोज महाभारत मची रहती है। परिणामस्वरूप दूसरा विवाह भी असफल बनने के राह पर आ जाता है।

'पिशाच्च लीला' कहानी का नायक रजपूतों की परित्यक्त्या बहू से विवाह करता है। लेकिन रजपूतों के लोगों को यह विवाह मान्य नहीं था। उसे अपनी पत्नी को छोड़ने के लिए पंचायत में बुलाया जाता है। वहाँ बिरजू के चम्पा को छोड़ने के लिए कहते हैं और तभी बिरजू पंचायत के सामने जवाब देता है कि - ''साहब लोगों, सुन लो, चम्पा के साथ मैंने कोर्ट में मैरिज की है। वह मेरी वाइफ है। इसलिए किसी भी हालत में मैं उसे घर से नहीं निकाल सकता।''[8] अर्थात भारतीय समाज में एक पुरूष पुनर्विवाह कर सकता है लेकिन एक स्त्री जब पुनर्विवाह करती है तो उसपर समाज की, उँगलियाँ उठती है। उसका जीवन नारकीय बना दिया जाता है।

तात्पर्य -

1. भारतीय समाज में स्त्री से ही त्याग समर्पण एवं एकनिष्ठता की अपेक्षा रखी जाती है, लेकिन पुरूष से नहीं।
2. पुरूष बिना तलाक से भी दूसरा विवाह कर सकता है।
3. जातीयता के कारण पुनर्विवाह करने का निर्णय तथा उसे निभाने के लिए एकाद पुरूष सच्चे हृदय से किसी शोषित-पीड़ित नारी से पुनर्विवाह करके अपनाता है, तो उस पुरूष को समाज से जूझना पड़ता है, संकटों का सामना करने के लिए उसे विवश किया जाता है।

अतः पुनर्विवाह पत्नी का हो या पति का सामाजिक, आर्थिक

संकटों का सामना अधिकतर स्त्री को ही करना पड़ता है। आज के युग में पुरूष के लिए त्याग, समर्पण, निष्ठा आदि मूल्यों का ऱ्हास हो रहा है लेकिन स्त्री से इस संदर्भ में अपेक्षा रखी जाती है।

4.3.3 आंतरजातीय विवाह की समस्या :

आंतरजातीय विवाह की समस्या भारतीय समाज में बदलती हुई पीढ़ी के द्वारा निर्माण हुई है। शिक्षा के कारण समाज में आंतरजातीय विवाह अधिक हो रहे है। इसका प्रमुख कारण आधुनिकतम नवीन प्रगतिशील विचारप्रणाली एवं शिक्षा से युवा पीढ़ी के विचारों में परिवर्तन होते है। परिणामस्वरूप विवाह संबंधी धारणाओं में भी बदलाव आ गया है। परिणामतः आंतरजातीय विवाह का चलन बदलने लगा है। अतः स्त्री-पुरूष समानता की भावना शिक्षा तथा समाज के कड़े बंधन अब खोखले साबित होने लगे है। प्यार के आगे दुनिया को झुकानेवाले प्रेमी आज विवाह जैसे पवित्र बंधन में बँधे नजर आते हैं। ऐसे विवाह अक्सर सुंदरता तथा गुणों से प्रभावित होकर किये जाते है, लेकिन जात-धर्म की दीवारें तोड़कर किये जाने वाले विवाह परिस्थिति के आगे झुकने के लिए कभी-कभी मजबूर होते हैं।

'धारा बहती रही' कहानी की युवती आत्महत्या करने नदी के किनारे आती है। क्योंकि उसने आंतरजातीय विवाह किया है। इसलिए उसे अपनों ने ठुकराया है और पति के मौत के बाद वह बेसहारा हो गयी है। इसलिए आत्महत्या करना चाहती है। नायक उसे पति के बारे में पूछता है तो वह उदास स्वर में बताती है -''वास्तव में उन्होंने मुझे धोखा नहीं दिया था, नियति हमें धोखा दे गयी। हमने मंदिर में जाकर चुपचाप शादी कर ली थी। हम दोनों के एक जाती के न होने की वजह से मेरे माता-पिता मान नहीं रहे थे। उनके माता-पिता तो जीवित थे ही नहीं रहे थे। आशा थी, बाद में हम अपने माता-पिता को राजी कर लेंगे और सब इकट्ठे रहने लगेंगे। और तभी जाना पड़ गया उन्हें किसी काम से शिमला। वहाँ से वापस नहीं लौट पाये वे। ऐक्सीडेंट में ...''[9] इतना कहने पर वह रोने लगती है। अर्थात आंतरजातीय विवाह करने पर किसी कारणवश अब उसके पति

की मौत होती है तो उसके पास आत्महत्या करने के सिवा कोई चारा नहीं रहता। क्योंकि उसने आंतरजातीय विवाह किया इसलिए माता-पिता उसका स्वीकार नहीं कर रहे थे। बेचारी अकेली गर्भवती विधवा अपना खुद का सहारा नहीं बन सकती वह पेट में पलते बच्चे का क्या सहारा बनेगी।

'एक और सावित्री' कहानी की नंदा आंतरजातीय प्रेमविवाह करती है इसलिए समाज के प्रतिष्ठीत लोग उसे भला-बुरा कहते है। उसके पति जब बीमार पड़ जाते है, तो लोगों की कठोर से कठोर बाते भी उसे सुननी पड़ती है। यहाँ लेखक नंदा के बारे में कहते हैं - ''सहाय्यता करने वाला, यहाँ तक कि झूठी सहानुभूति तक दिखाने वाला कहीं कोई नहीं था। उलटे, लोग मजाक उड़ाते.... बुरे कर्म अर्थात प्रेम-विवाह करने का फल मिल रहा है।''[10] अर्थात आंतरजातीय विवाह करने पर समाज में लोग घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं।

तात्पर्य -

1. आज भी समाज अपने आपको आधुनिक विचारों का मानता है, फिर भी वह आंतरजातीय विवाह के लिए मान्यता नहीं देता है।
2. आंतरजातीय विवाह कठिनता से बन पाते है, लेकिन ऐसे रिश्ते में मजबूरन परिवारवालों से विद्रोह करना पड़ता है।
3. आज भी आंतरजातीय विवाह के लिए पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर विरोध होता है।
4. आंतरजातीय विवाह से कही-कही नारी की दयनीय दशा होती है।

अर्थात नारी-जीवन में मुख्यतः विवाह की समस्या परिलक्षित होती है। विवाह व्यक्ति के सामाजिक कर्तव्यों की पूर्ति के लिए तथा परिवार कल्याण के लिए किया जाता है। विवेच्य कहानियों में आंतरजातीय विवाह की समस्या को एक सामाजिक समस्या हैं जिसके कारण स्त्री अपनों से दूर होती है तो कहीं समाज के लोग उसे उपेक्षित नजरों से देखते हैं, ताने मारते है तो कभी-कभी वह अपना अस्तित्व खोने पर मजबूर होती है।

4.3.4 युवती के क्रय-विक्रय की कुप्रथा की समस्या :

भारतीय समाज के आदिम समाज में अनेक कुप्रथाएँ है, जिससे मानवीय जीवन विड़म्बनाग्रस्त बना है। व्यक्ति को पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर संघर्ष करने के लिए तैयार होना पड़ता है। भारतीय नारी पुरूष के अधीन रहती है परिणामस्वरूप वह पुरूष की इच्छा के अनुसार ही सब कुछ करती है। ऐसा ही एक संघर्ष 'समय के चरण' कहानी में चित्रित है। शादी के नाम पर लड़कियों को खरीदा तथा बेचा जाता है। आज भी यह प्रथा कहीं-कहीं दिखाई देती है सिर्फ आधुनिकता के नाम पर इनमें कुछ बदलाव आ गया है। ''कम्मों के पिता उसकी शादी तय करते हुए कहते हैं - ''दो हजार से कौड़ी कम नहीं। ब्याह का खर्च अलग। हजार-हजार की तो लड़की की एक-एक आंख ही है। देख लो....।''[11] अर्थात शादी के आड में लड़की को बेच दिया जाता है। और खरीदने वाला लड़कियों के हर एक अवयव की जाँच करता है।

तात्पर्य -

1. भारतीय समाज में विवाह जैसे पवित्र बंधन में भी किसी-न-किसी प्रकार कुप्रथा का समावेश हुआ है।

अर्थात स्पष्ट है कि लेखक ने नारी के विक्रय की समस्या को भी चित्रित किया है किंतु इस समस्या को अल्प मात्रा में चित्रित किया दृष्टिगोचर होता है।

निष्कर्ष -

समाज में स्त्री-पुरूष संबंधों में विषमता पाई जाती है। अभी भी पुरूष स्त्री से अपने आपको श्रेष्ठ समझता है। इसलिए साठ साल का आदमी अपनी बेटी की उम्र की लड़की से विवाह करता है। अनमेल विवाह कभी भी स्त्री के इच्छा के अनुसार नहीं होते बल्कि जबर्दस्ती अथवा आर्थिक कठिनताओं के कारण किये जाते हैं । इसी तरह 'खुशी भरा दिन' कहानी की नीलू खस्ताहाल, परिस्थिति, आर्थिक विपन्नता के कारण साठ साल के ठेकेदार से विवाह करती है। विवशतावश किया गया विवाह होने के कारण वह अनुभव करती है कि उसकी

डोली नहीं उठाई जा रही है अर्थी उठाई जा रही हो।

आंतरजातीय विवाह की समस्या हर युग में रही है। हम देखते है कि विवाह के क्षेत्र में जातिप्रथा समाप्त करने का दर्शक जी ने प्रयत्न किया है। विशेष रूप से उन्होंने आंतरजातीय विवाह से अधिक मनुष्य के भावनाओं की कदर की है। समाज की पुरानी सड़ी-गली मान्यताओं को तोड़ने का प्रयास वे अपनी कहानियों के माध्यम से करते हैं। फिर भी आंतरजातीय विवाह आज समाजमान्य होते दिखाई नहीं देते। इसलिए आंतरजातीय विवाह के सफलता की कोई गारन्टी नहीं है। दुर्भाग्यवश साधुराम दर्शक जी की कहानियाँ - 'धारा बहती रही', 'एक और सावित्री' आदि में परिवार के खिलाफ जाकर नायक-नायिका विवाह करते है, लेकिन नियति के आगे विवश हुई दिखाई देते है। 'धारा बहती रही' की नायिका गर्भवती है लेकिन उसने आंतरजातीय विवाह किया है। पति के मौत से बेसहारा हुई तो वह आत्महत्त्या करने का निर्णय लेती है।

पुनर्विवाह की समस्या के अंतर्गत विवाह पति का हो या पत्नी का इसका परिणाम तो स्त्री को ही भोगना पड़ता है। विवाह विच्छेद के बाद स्त्री को समाज हीन भावना से देखता है। दूसरा विवाह करने के बाद भी स्त्री को समाज जीने नहीं देता । इसका उदाहरण 'पिशाच्च-लीला' कहानी की 'कम्मो' का है। 'चन्द्रकिरण' कहानी में पुनर्विवाह की समस्या दिखाई देती है। नरेंद्र अपनी पहली पत्नी चन्द्र का कुरूप अज्ञान गँवार रूप देखकर उसे त्यागकर फैशनेबल लड़की से दूसरा विवाह करता है लेकिन फैशनेबल पत्नी के नखरे सहते-सहते तंग आता है और वह विवाह भी टूटने के कगार पर है।

लेखक ने नारी के क्रय-विक्रय की कुप्रथा का चित्रण 'समय के चरण' कहानी में किया है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि विवाह एक पवित्र बंधन है जो स्त्री-पुरूष के शारीरिक तथा मानसिक मिलन का आधार है।

4.4. पारिवारिक समस्या :

स्त्री-पुरूष का जीवन पति-पत्नी या दम्पति रूप में परिवर्तित होने

से परिवार का जन्म होता है। पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्तर पर परिवार से संबंधित विविध समस्याएँ निर्माण होती है, लेकिन परिवार की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या आर्थिक है। साधुराम दर्शक की विवेच्य कहानियों में पारिवारिक समस्या का केंद्र बिंदु भी आर्थिक समस्या ही है। अर्थ से जीवन की सार्थकता है अन्यथा जीवन निरर्थक होता है।

4.4.1 आर्थिक समस्या :

'दीवारें बोलती है' कहानी के अंतर्गत पारिवारिक समस्या के केंद्र में आर्थिक अभाव की दयनीयावस्था को उजागर किया है। प्रस्तुत कहानी में बढ़ती मँहगाई के बारें में एक निम्नलिखित कथन है - ''महँगाई भी इस दौरान बढ़ती ही गयी। बच्चों को पढ़ाना तो अलग रहा, परिवार के लिए दो जून का खाना जुटाना भी मंगू के लिए असम्भव हो गया।''[12] अर्थात अर्थ के अभाव से मनुष्य अपने आप में खोया रहता हैं अंदर टूट भी जाता है। इन सभी का परिणाम उसकी पत्नी तथा बच्चों पर होता हैं।

'डायरी के कुछ पन्ने' कहानी के 'कपूर साहब' कहते हैं - ''पैसा हमारी हर खुशी के आड़े आ जाता है।''[13] इस तरह मध्य तथा निम्नवर्ग की न जाने कितनी खुशियाँ पैसे के अभाव से पूरी नहीं होती।

'सांपन' कहानी में आर्थिक अभाव इस कदर दिखाई देता है कि रामकली को अनेक चिंताएँ लगी रहती है। पति के बीमारी के कारण घर में कमानेवाला कोई नहीं था। रामकली दूसरों के घर चौका-बरतन करके जो भी लाती है वह बच्चों और पति को खिलाती है। एक दिन मकान मालिक धमकी दे गया था कि ''यदि सात दिन के भीतर किराया आदा नहीं किया गया, तो वह सामान निकालकर बाहर फेंक देगा। और सात दिन कल हो गये थे, पर छः की तो बात ही क्या, एक महीने के किराये का प्रबंध भी नहीं हो सकता था।''[14] अर्थात रामकली हमेशा मकान का किराया, बच्चों की जिम्मेदारी, पति की बीमारी आदि चिंता में खोई रहती है। इस तरह अर्थ के अभाव से मानवीय जीवन चिंताग्रस्त तथा खोखला बनता जा रहा है।

'अगले अप्रैल' कहानी में योगेन्द्र नाथ की इच्छा और योग्यता होने के बावजूद भी अर्थाभाव के कारण निम्नवर्गीय युवक उच्च शिक्षा हासिल नहीं कर सकता। उसे आर्थिक अभाव में किस प्रकार दयनीय तथा विवश बना दिया है। इसका यथार्थ वर्णन लेखक ने किया है। वह लेखक को एक पत्र में अपनी विवशता लिखता है - ''पढ़ाई मैंने शुरू कर दी है। इस जून में प्रभाकर की परीक्षा में बैठने का विचार है लेकिन, जी, पुस्तकों की बहुत कठिनाई है। पुस्तकें बहुत अधिक है और बहुत मँहगी है। मुझे जो साठ रूपये मिलते है, वे आटे-दाने में उड़ जाते है।''[15] इसतरह आज के युग में शिक्षा पाना बहुत मुश्किल हो गया है। कई युवक ऐसे है, जिनके पास नौकरी पाने के लिए रिश्वत के रूप में पैसे नहीं है, मानो तनख्वाह के पैसे पाने के लिए रिश्वत के रूप में पैसे देने है, अन्यथा तो नौकरी पाना मुश्किल है। याने एक तरह से अर्थाभाव ने बेकारी और रिश्वतखोरी की समस्या निर्माण की है।

तात्पर्य -

1. अर्थाभाव के कारण मनुष्य अपनी छोटी-छोटी इच्छाएँ भी पूरी नहीं कर सकता है।
2. अर्थाभाव के कारण मध्य तथा निम्नवर्गीय लोगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अर्थात समस्या का मूल कारण निर्धनता, गरीबी, बेकारी और धन का अभाव है। 'अर्थ' से मनुष्य की जिंदगी सार्थक होती है। अन्यथा उसका जीवन नरकीय बन जाता है। स्पष्ट है कि साधुराम दर्शक ने मध्य तथा निम्नवर्गीय आर्थिक समस्या को यथार्थ रूप में चित्रित किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

4.4.2 बेकारी की समस्या :

आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार से उच्च शिक्षा प्राप्त असंख्य युवक-युवतियाँ नौकरी की खोज में प्रतिवर्ष निकलते हैं परंतु बहुत कम लोगों को इच्छित नौकरी मिलती है। बेकारी ने समाज के निम्नवर्गीय युवकों को और भी जर्जरीत बना लिया है। उच्च शिक्षा का अभाव, बेकारी, रिश्वतखोरी बड़े व्यक्ति

की सिफारिस न मिलना आदि विविध कारणों से यह वर्ग खस्ताहाल हो गया है। मँहगाई के जमाने में बेकारी ने समाज की कमर तोड़ दी है।

'कुत्ता-जिंदगी' कहानी का रमेश उच्च शिक्षित होते हुए भी नौकरी के लिए दर-दर की ठोकरे खाता फिरता है लेकिन सिफारिस न मिलने की तथा रिश्वत देने के लिए पैसे न होने से उसे कहीं भी नौकरी नहीं मिलती है। बेकार युवा वर्ग की विक्षुब्ध हुई मानसिकता का वास्तविक चित्रण रमेश के द्वारा किया है। आखिर लाचार होकर उच्च शिक्षित होते हुए भी मजदूरी ही नहीं कोई भी नौकरी करने के लिए विवश होता है। इसलिए मजदूर के इन्टरव्यूह के लिए जाता है। और कहता है - ''मैं तो शर्मा साहब, अब बेकारी से इतना तंग आ चुका हूँ और ऐसी मनःस्थिति में हूँ कि अगर भंगी की नौकरी भी मिलेगी तो वह भी कर लूँगा।''[16] अर्थात बेकारी के कारण आज का युवक घोर निराशावादी तथा आत्मग्लानि से पीड़ित दिखाई देता है।

'खुशी भरा दिन' कहानी का नायक बेकारी के कारण बहन की शादी में नहीं जा पाता है क्योंकि बहन के लिए तोहफा खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं है। अतः आर्थिक अभाव के कारण परिवार वालों की इच्छाएँ अधूरी रह जाती हैं।

'जागो' कहानी का नायक भी सुशिक्षित बेकार है इसलिए वह अपनी प्रेमिका से विवाह नहीं कर सकता। आखिर लड़की की शादी उसके परिवार वाले दूसरे युवक के साथ करते हैं। अपनी प्रेमिका की शादी दूसरे लड़के के साथ होने के कारण युवक अंदर से टूट जाता हैं। उसकी माँ की मृत्यु दवाईयों के अभाव में होती है। इसलिए नायक इन सभी गमों को सह नहीं पाता और उसकी हार्टफैल से मृत्यु हो जाती है। उसके बारे में पड़ोसी कहते हैं - ''मां छः मास से बीमार चली आ रही थी। रात बहुत बीमार हो गयी। घर में डाक्टर बुलाने के लिए एक पैसा तक न था। बचा-खुचा घर का सामान बेच कर लड़के ने डाक्टर को बुलाया, पर तब तक बुढ़िया बेचारी इस दुखिया संसार को छोड़ कर जा चुकी थी। लड़का यह सदमा न सह सका। हार्ट फेल हो गया।....''[17]

'डायरी के कुछ पन्ने' कहानी का बिटटू बी.एस.सी.पास है, लेकिन जहाँ भी नौकरी के लिए जाता है 'जगह खाली नहीं है' ऐसा जवाब उसे मिलता है। कपूर साहब एक दिन कहते हैं - ''बेकार से बेगार भली - इस कहावत की सच्चाई अजकल मुझ पर खूब जाहिर हो रही है। बिट्टू एक साल से ज्यादा समय से बेकार है। दिल्ली की शायद ही कोई सड़क हो, जो इस दौरान उसने न नापी हो।''[18] अर्थात आज कल की बेकारी से युवावर्ग तो त्रस्त है ही साथ ही उनके पिता तथा परिवार वाले भी त्रस्त हैं।

'नये युग की यक्षिणी' कहानी की नायिका आवेदन पत्र का इस कदर राह तकती है। जैसे पुराण कथा में यक्षिणी अपने प्रेमी यक्ष की। इसका चित्रण लेखक ने सक्षमता से किया है।

तात्पर्य -

1. बेकारी से ग्रस्त निम्नवर्ग की खस्ताहाल स्थिति का विदारक चित्रण प्राप्त होता है।
2. आधुनिक शिक्षा के प्रचार तथा प्रसार के कारण असंख्य युवक-युवतियाँ प्रतिवर्षी बेकारी की खाई में गिरते दिखाई देते हैं।
3. पारिवारिक आत्मीय रिश्तों में बेकारी के कारण दुरियाँ आ जाती है।
4. बेकार युवक-युवतियों को परिवार वाले निक्कमा, आलसी अकर्मण्य मानते हैं।

अर्थात यह कह सकते हैं कि बेकारी और मँहगाई से लोगों का जीवन पीसता हुआ दिखाई दे रहा है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के लोगों की सच्चाई लेखक ने उद्‌घाटित की हैं।

4.4.3 आवास की समस्या :

आज भारत की लोकसंख्या दिनोंदिन बढ़ने के कारण आवास समस्या ने भीषण विकराल रूप धारण किया है। परिणामस्वरूप आज यह समस्या गाँवों में भी दिखाई दे रही है।

'लगे रहिए मंगतरामजी' कहानी में मंगतराम शहर में एक छोटासा घर बनाने का सपना देखता रहता है, लेकिन आखिर तक उसका सपना पूरा नहीं हो पाता है। वह सपना ही रह जाता है। वह अपनी पत्नी से सपने के बारे में कहता है - ''देखा कि एक बहुत सुन्दर बंगला है, जिसके बरामदे में फूलों के गमलों के बीच मैं कुर्सी पर बैठा अखबार पढ़ रहा हूँ। तभी तुम चाय की ट्रे.....''[19] और बीच में ही सपना टूट जाता है। तो वह पत्नी को डाँटता भी है। इस तरह शहर के किराये के मकान में रहनेवाले लोग अपना घर बनाने का सपना देखते रहते हैं।

'एक वीतरागी के नोटस' कहानी में भी आवास की समस्या को लेखक ने चित्रित किया है।

'दीवारें बोलती है' कहानी में आवास की समस्या को वर्णित करते हुए लेखक कहता है - ''मैं कब्र में लेटा हूँ। हाँ कब्र ही तो है यह छह फूट लम्बी, छह फूट चौड़ी, कठिनाई से सात फूट उंची। उबड़-खाबड़ फर्श, हवा और रोशनी आने के लिए रोशनदान और खिड़की के नाम पर ऊपर तीन-चार चौकोर सूराख क्या कहेंगे और आप इस अंधेरी कोठरी को।''[20] अर्थात असुविधाओं से वंचित घर में विवश होकर लोगों को रहना पड़ता है।

तात्पर्य -

1. आज कल आवास की समस्या बड़े नगरों में ही नहीं गाँवों में भी दिखाई देती हैं।
2. आवास की समस्या के कारण बूढ़े-बड़ों को घर में रखना घरवालों को अड़चन अनुभव होती है।

अतः यह कह सकते हैं आवास की समस्या महानगर की प्रमुख समस्या है जिसका चित्रण लेखक ने यथार्थ के रूप में अपनी कहानियों में किया हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कहा जाता है कि पारिवारिक समस्या के अंतर्गत वर्तमान युग में बदलते परिवेश के अनुसार विविध समस्याएँ निर्माण हो रही हैं। इन

समस्त समस्याओं के जड़ में मुख्यतम समस्या 'आर्थिक' है। लेखक ने पारिवारिक समस्या में - आर्थिक समस्या' , बेकारी की समस्या, आवास की समस्या आदि समस्याओं का उद्‌घाटन किया है।

आर्थिक समस्या का अंकन 'दीवारें' बोलती है', 'डायरी के कुछ पन्ने', 'अगले अप्रैल में' आदि कहानियों में बड़ी मार्मिकता से किया हैं। इसमें कहीं-कहीं अत्यंत कटुतापूर्ण चित्रण लेखक ने किया है उदा. 'दीवारें बोलती है' कहानी में आर्थिक अभाव के कारण नायक अपने बीवी बच्चों का खून करके खुद आत्महत्या करता है।

बेकारी की समस्या 'कुत्ता-जिंदगी', 'खुशी भरा दिन', 'डायरी के कुछ पन्ने', 'नयें युग की यक्षिणी' आदि कहानियों में संवेदनशीलता से हुआ है। इसमें युवा वर्ग पढ़ा-लिखा होकर भी बेकार की जिंदगी जीता है। उनकी दयनीयावस्था का चित्रण लेखक ने प्रस्तुत कहानियों में किया है।

आवास की समस्या भारतीय समाज में भयावह रूप धारण करती नजर आ रही है। इसलिए मनुष्य स्वार्थी, खुदर्गज, झूठा, मक्कार, कमीना बनता जा रहा है। परिणामतः खून के रिश्तों में दुरियाँ निर्माण हो गई हैं इसका स्वाभाविक वर्णन 'लगे रहिए मंगतराम जी' तथा 'एक वीतरागी के नोटस', 'दीवारें बोलती हैं' आदि कहानियों में वास्तववादी रूप में अंकन हुआ है।

इस प्रकार साधुराम दर्शक ने पारिवारिक समस्या को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

4.5. नारी की समस्या :

'नारी' समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। नवनिर्माण का वरदान उसे निसर्गतः मिला है। इसलिए उसे आदरणीय तथा सन्माननीय व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। लेकिन एक तरफ पूजनीय देवी का रूप धारण करनेवाली नारी को समाज की कुप्रथाओं ने उसे दैन्यावस्था में पहुँचा दिया है। इन्हीं कुप्रथाओं में दहेज जैसी कुप्रथाने तो स्त्री का जीवन नारकीय बना दिया है। दहेज प्रथा प्राचीन काल से चली आई है। 19वीं सदी में पति की चिता पर बलि जानेवाली नारी आज भी उसकी

चिता पर बलि जाती है लेकिन दहेज के नाम पर। नारी का शोषण उसके परिवार से ही शुरू होता है। परिवार, समाज और नौकरी में स्त्री अन्याय और जुल्म का शिकार बनती है, लेकिन भारतीय नारी के जीवन में समय के साथ पर्याप्त परिवर्तन भी होता दिखाई देता है। भारतीय समाज ने नारी का हमेशा शोषण किया है। प्रा.धरनजी के मतानुसार ''सेवा और त्याग की मूर्ति नारी को भारतीय पुरूष प्रधान समाज द्वारा शोषित, पीड़ित, अशिक्षित और हीनवृत्ति का शिकार होना पड़ा।''[21] अर्थात पुरूष प्रधान संस्कृति में स्त्री को एक तरफ त्याग की मूर्ति कहा है और उँचा उठाया है, लेकिन दूसरी तरफ नारी को 'उपभोग का साधन' माना है।

4.5.1 दहेज की समस्या :

भारतीय समाज में दहेज प्रथा ने विवाह को जटिल बना दिया है। यह समस्या उच्च-मध्य तथा निम्न आदि सभी वर्गों में पाई जाती है। दहेज के कारण अनेक लड़कियों को कुंठाग्रस्त जीवन जीना पड़ता हैं। दहेज के सामने इन्सानियत की कोई किमत नहीं होती है।

'एक वीतरागी के नोट्स' कहानी की निक्की को दहेज लाने के लिए उसके ससुरालवाले मायके भेजते हैं। उसका भाई कहता है -''निक्की को उसके पति ने छोड़ रखा है। कहता है, निक्की सुन्दर नहीं है और फूहड़ है। लेकिन असल बात यह है कि हम उसे काफी दहेज नहीं दे पाये है। निक्की के ससुराल वालों को यदि आज काफी मात्रा में दहेज दे दिया जाय तो निक्की एकदम अद्वितीय सुन्दरी और सुगड़ बन जाय।.... बेचारी तीन साल से यहाँ पड़ी है।''[22] अर्थात् दहेज के नाम पर या किसी भी रूप में लड़की के ससुराल वालों को धन मिल जाये बहुत प्यारी हो जाती है।

कभी-कभी तो जिस लड़की की दहेज देने की हैसियत नहीं होती उनका जीवन बढ़ती उम्र के कारण नारकीय बनता है। आमतौर पर अभावग्रस्त परिवार की सुशील सलीकेदार लड़की का विवाह दहेज देने की नौबत न आये इसलिए बूढ़े आदमी से शादी करती है। 'खुशी भरा दिन' कहानी की नीलू घर की आर्थिक परिस्थिति देखकर खुद साठ साल के आदमी से विवाह करने के लिए

तैयार होती है।

तात्पर्य :

1. दहेज की समस्या समाज को लगा हुआ एक कलंक है।

2. दहेज के नाम पर अनेक लड़कियों की बलि दी जाती है।

इस कुत्सित और घृणित समस्या को लेखक ने उजागर करते हुए समाज को अंतर्मुख किया है।

अर्थात दहेज प्रथा समाज को लगा एक ऐसा कोढ़ है जिससे युवतियों के सपने काँच की तरह टूट जाते है। दहेज प्रथा के कारण आज भी लड़की का जन्म होने पर परिवारवाले दुःखी हो जाते हैं। तथा भ्रूणहत्या का यही एक कारण हैं।

4.5.2 प्रेम की समस्या :

प्रेमविवाह आज भी भारतीय समाज में पूर्वतः मान्यताप्राप्त नहीं है , लेकिन प्रेम मानो मन की कोमल भावना है। प्रेम को कुछ लोग उदात्त, तो कुछ लोग हेय मानते हैं। इसपर डॉ.रामविलास शर्मा का कथन है - ''प्रगतिशील साहित्य नारी के स्वाधीनता का पक्षपाती है। संपत्ती जाती और धर्म के विचार से किए हुए विवाहों की वेदी पर देश के युवक और युवतियों के प्रेम की बलि देने का सख्त विरोधी है। वह उनके प्रेम करने के अधिकार और जीवन में एक साथ रहने का संघर्ष करने के अधिकार का समर्थन करता है।''[23] वर्तमान युग में आधुनिक प्रगतिशील विचारों के कारण प्रेम तथा प्रेमविवाह का समर्थन किया गया है।

समाज में रूढि-परंपरा के अनुसार विवाह होते है। प्रेम में सफलता पाना आसान नहीं, उसके लिए परिवार, रूढी परंपरा, सामाजिक विरोध तथा जाति-पाँति को त्यागना पड़ता है। 'धारा बहती रही' कहानी का युवक प्रेमिका की बेवफ़ाई को बर्दाश्त नहीं कर पाता। इसलिए आत्महत्या करने के विचार से घर से बाहर निकलता है।

'एक और सावित्री' कहानी की नंदा समाज के विरोध को ठुकराकर

एक नीच जाति के लड़के से प्रेमविवाह करती है और उसे निभाने की कोशिश भी करती है।

'कंकाल हँसता है' कहानी में संगीता पढ़ी-लिखी युवती है। वह अपने एक नीच जाति के मित्र के साथ विवाह करना चाहती है। लेकिन संगीता के पिता को यह रिश्ता नामंजूर होता है। वह संगीता की मर्जी जाने बिना उसके मित्र को हमेशा दूर करते है। संगीता यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाती। परिणामस्वरूप वह अपना मानसिक संतुलन खोती है और अपने पिता से नफरत करती है।

तात्पर्य -

1. प्रेम की स्वाभाविकता, संयत और संयम से टिकी रहती है।
2. भारतीय समाज में लड़की का अपना जीवनसाथी चुनना अपराध माना जाता है।

अतः यह कहा जाता है कि स्त्री-पुरूष के बदलते संबंधों से उत्पन्न प्रेम-विवाह की समस्या की दास्तान का समावेश लेखक ने अपनी कहानियों में किया है।

4.5.3 बलात्कार की समस्या :

नारी के सहमती के बिना किया यौनाचार बलात्कार कहा जाता है। ''हमारे देश में हर 54 मिनिट एक लड़की पर बलात्कार होता है और हर 43 वे मिनिट में किसी लड़की के साथ अपहरण या हिंसा की घटना होती है।''[24] अर्थात आज समाज में नारी सुरक्षा के कितने कायदे-कानून बनाये गए हैं। फिर भी विविध अंगों से नारी का शोषण किया जा रहा है। 'बलात्कार' की समस्या उनमें से एक भयानक पीड़ादायी, समाज को कलंकित करनेवाली कृती है।

'चार्ज-शीट'कहानी में बलात्कार के भयानक प्रसंग को चित्रित किया है। कहानी की नायिका 'कुसुम' को उसका बॉस चार्ज-शीट के बहाने घर बुलाता है। घर में पहले से ही समाज के उध्दारक तथा नेता आए थे। पूरी प्लॅनिंग के साथ कुसुम पर बलात्कार करते है। इस भयानक प्रसंग का वर्णन कहानी में

किया है - ''गिद्ध अपने जुकीले मजबूत पंजों और तेजनुकीली चोचों से उसकी खाल उध्देडने लगे। छाती मुँह और जांगे नोचने लगी। भयानक पीडा, असाहय दर्द, नारकीय यातना।... ठंडा अंधेरा तेजी से उसे अपनी ओर बढ़ता महसुस हुआ.... ठंडा अंधेरा पूरी तरह उसपर छा गया ....।''[25] अर्थात आज युवतियों को ऐसे भयानक प्रसंगों का सामना करना पड़ रहा है। इस मरणांतक यातनाओं को सहना मुश्किल होता है और कभी-कभी इस घटनाओं में नारी की मृत्यु हो जाती है। समाज में निर्माण होनेवाली इन क्रूर, घृणास्पद घटनाओं का विरोध करने के लिए लड़कियों को बचपन से ही जूडो, कराटों का प्रशिक्षण देना चाहिए। जिससे ऐसे घृणास्पद काम करने वाले लोगों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। तो नारी बलात्कार की समस्या से छुटकारा पा सके।

तात्पर्य -

1. आज-कल हर स्तर पर स्त्री पर मानसिक तथा शारीरिक बलात्कार किया जा रहा है।
2. बलात्कार की समस्या एक नारी समस्या ही नहीं बल्कि सामाजिक समस्या है।
3. पुरूष की वासनांधता, विकृत मानसिकता की शिकार स्त्री किस प्रकार होती है। इसका वास्तविक चित्रण मार्मिकता से किया है।

अतः यह कह सकते है कि बलात्कार की समस्या को लेकर अधिक लेखन नहीं हुआ लेकिन नारी समस्या में सबसे विकृत तथा भयानक यह समस्या है। जिससे नारी के अस्तित्व पर ही साशंकता निर्माण होती है।

4.5.4 विधवा की समस्या :

भारतीय समाज में विधवा को किसी भी मांगलिक कार्य में सहभागी होने का अधिकार नहीं दिया गया। वह हर समय अमांगलिक अशुभ मानी गयी हैं। एक पुरूष जब विधुर होता है तो उसकी दूसरी शादी की जाती थी। लेकिन विधवा का दूसरा विवाह निदंनीय समझा जाता है।

1829 ई. के सती प्रथा निषेध कानून ने विधवा को जिन्दा जलाने से बचा लिया। कई समाज सुधारकों ने विधवा विवाह को मान्यता देने का प्रयास किया। मा.ज्योतिबा फुले जी ने तो 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' निर्माण किया। फिर भी आज भी अपना समाज विधवा को त्यागमयी, तपस्विनी के रूप में देखना चाहता हैं।

ड़ायन कहानी की 'मेम बेबे' किशोरी विधवा है। उसके घर वाले उसका दूसरा विवाह करना इज्जत के खिलाफ मानते हैं। उसके पिता उसे पुराण ग्रंथ पढ़ने के लिए कहते है ताकि उसके मन में कोई अनैतिक विचार न आयें। फिर भी मेमो बेबे का जवानी के रास्ते पर पैर फिसलता हैं और वह दर्शन नामक लड़के से प्रेम करती है और उससे गर्भवंती बनती हैं। घरवाले उससे नफरत करने लगते हैं, माँ उसे पीटती हैं। लेखक उसकी दशा को चित्रित करते हुए कहते है - ''मेम बेबे की दशा अजीब थी। वह बिना प्रतिवाद किए सब कुछ सहती रहती। किसे से कुछ न कहती। यहाँ तक कि रोती भी नहीं थी। जो दिया जाता खा-पी लेती (उन दिनों बेहद कड़वे और दुर्गन्ध-युक्त काढ़े पीने को दिए जाते थे) और दिन रात पिछली कोठरी में चार पाई पर लेटी एक टक छत की ओर ताकती रहती।''[26] अर्थात् किसी जवान विधवा का पैर फिसल जाता है तो उसे अनंत यातनाएँ सहनी पड़ती है।

बाल बच्चोंवाली विधवा का दूसरा विवाह करवाना किसी भी हालत में परिवारवालों को एवं समाज को मान्य नहीं है तो दूसरी शादी करने का सवाल ही पैदा नहीं होता है। 'माँ के आँसू', 'जीवन दीप जलता रहें' आदि कहानियों में पति की मृत्यु के बाद बेटे के सहारे दुःखभरी जिंदगी बितानेवाली नारी का चित्रण किया गया है।

तात्पर्य -

1. आज भी भारतीय समाज विधवा स्त्री को विरागिनी, त्यागमयी और तपस्विनी के रूप में देखना चाहता है।
2. पति की मृत्यु स्त्री के जीवन में अनेक समस्या, पीड़ा, यातना देती हैं।

3. विधवा नारी सामाजिक कुरीतियों की विपदाओं को सहने के साथ पारिवारिक अत्याचारों को भी सहती हैं।

4. भारतीय समाज में विधवाओं का जीवन अभिशप्त है।

अर्थात कहानी में विधवाओं की दयनीय जीवन को देखकर स्पष्ट होता है कि वैधव्य नारी के लिए कितना बड़ा अभिशाप है। इसका विवेच्य चित्रण मिलता है।

4.5.5 वेश्या की समस्या :

वेश्या समस्या अत्यंत तीव्र समस्या है। यह समस्या प्राचीन काल से चली आयी है। वास्तव में धन के लिए विवश होकर नारी वेश्या बनती है। ''हमारे यहाँ प्राचीन काल में नारी का क्षेत्र घर समझा जाता था परिवार का पालन पोषण करना और उसके प्रत्येक प्राणी के विकास में सहायक होना ही नारी का प्रमुख कर्तव्य था। परिवार के लिए अर्थ का प्रबंध करना पुरूष काम था, आगे चलकर नारी पूर्णतया पुरूष पर अवलंबित रहने लगी। फलस्वरूप पुरूष ने उसे अपने अहं के कारण अपनी दासी का स्थान दिया। समाज में उचित सम्मान न पाकर नारी का पतिता और भ्रष्ट होना स्वाभाविक है और ऐसी स्थिति में तो और भी, जब वह आर्थिक दृष्टि से पुरूष पर आश्रित हो।''[27] नारी आर्थिक दृष्ट्या पुरूष पर निर्भर होने के कारण पुरूष उसे अपनी इच्छा से रखता है। नारी वेश्या बनने के अनेक कारण हैं - ''जीवन की विवशताओं के कारण पथभ्रष्ट हो जानेवाली नारी ''वेश्या'' कही जाती थी। और एक प्रकार से वह समाज से बहिष्कृत थी।''[28] अर्थात् वेश्या समाज की महत्त्वपूर्ण समस्या हैं। नारी का कलंकित रूप हैं, जो समाज की विकृति का द्योतक हैं। वेश्या की दयनीय परिस्थिति का अंकन करते हुए साधुराम दर्शक की 'पतिता' कहानी वेश्याओं के प्रति समाज की क्या धारणा होती है इस पर प्रकाश डालती है।

समाज की इन विकृत प्रवृत्तियों वाले लोगों की मनोवृत्ति का उद्‌घाटन लेखक ने इस प्रकार किया हैं - ''श्याम के चार बजे के लगभग रोज यह ड्रामा दोहराया जाता। वह चली जाती और दर्जी की उस दुकान पर काम करने वाले

छः आदमियों के दिलों में आग लग जाती। रस ले लेकर, हँस-हँस कर, घंटो वे उसके विषय में गन्दी अश्लील बातें करते रहते।''[29] अर्थात् पतिता अगर अपना जीवन सुधारना चाहे, नई जिन्दगी जीना चाहे, तो समाज के विकृत मनोवृत्ति के लोग उसे ताने मारते हैं, घृणा की दृष्टि से उसे देखते हैं और ऐसी स्त्री का जीवन नारकीय बनाते हैं।

'कंकाल' कहानी में निर्धनता एवं गरीबी के कारण माता-पिता पत्थर दिल बनकर अपनी ही बेटी को वेश्या बनाने के लिए मजबूर करते हैं। निम्नवर्ग की यह भयानक समस्या है। 'अर्थ' के लिए नारी अपना देह विक्रय करने के लिए तैय्यार हो जाती है, अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए वह अपनी इच्छा के विरूध्द शरीर का सौदा करती है।

तात्पर्य -

1. वेश्या समस्या आर्थिक समस्या से जुड़ी है।
2. निम्न वर्ग में अर्थ के लिए नारी वेश्या व्यवसाय जैसे घृणित मार्ग पर चलने के लिए बाध्य होती हैं।
3. नारी समस्या में वेश्या समस्या नारी के लिए सबसे बड़ी समस्या हैं।

अतः हम यह कह सकते है कि अर्थ का दानव नारी को वेश्या बनाने के लिए मजबूर करते हुए उसे पथभ्रष्ट करता है।

निष्कर्ष :

विवेचित कहानियों के माध्यम से नारी समस्या के बारे में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान युग में नारी को अनेकविध संघर्षों का, समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। भारतीय समाज में नारी को नियमों तथा बंधनों की जंजीरो में जकड़ कर रखा हैं। इसी कारण नारी हर जगह शारीरिक, मानसिक अत्याचार से पीड़ित हैं। एक तरफ स्त्री-पुरूष समानता का ढ़िढ़ौरा पीटने वाला समाज दूसरी तरफ अपने घर में उसपर अन्याय, अत्याचार ढ़ोता हुआ दिखाई देता है।

आज दहेज की समस्या में कितनी नारियाँ बचपन से जवानी तक

कुंठाग्रस्त जीवन जीती है। 'एक वीतरागी के नोटस' कहानी में दहेज न देने कारण मायके में कुंठा ग्रस्त जीवन जीने वाली नारी का प्रतिनिधित्व निक्की करती है।

विवाह विच्छेद की समस्या में पहल नारी नहीं करती तो पुरूष करता है। क्यों कि जिस दिन ससुराल छूट जाता हैं उसी दिन उसके लिए मायके का दरवाजा बंद हो जाता है। 'चन्द्रकिरण' कहानी में 'चन्द्र' को जब उसका पति नरेन्द्र छोड़कर जाता है, उसी समय भैय्या-भाभी भी अपना मुँह फेर लेते हैं। 'पिशाच्च लीला' कहानी की चम्पा पति के छोड़ने पर आत्महत्या करने के लिए निकलती हैं। आज भी स्त्री पुरूष के आधार के बिना अपना जीवन जी नहीं पाती। जीवन के पहिए स्त्री-पुरूष हैं अगर इसमें से एक बेकार हो जाए तो जीवन की रेल कैसे दौड़ सकती हैं।

प्रेम मनुष्य जीवन के लिए संजीवनी है उसके लिए वह कुछ भी कर सकता हैं। जाति, धर्म जैसे निरर्थक बंधनों को तोड़कर , पुराने रीति रिवाजों को ठुकरा कर जब कोई प्रेम करता है, तो उसे निभाने के लिए समाज से संघर्ष करना पड़ता हैं। 'कंकाल हँसता है' तथा 'एक और सावित्री' कहानी में प्रेम के लिए जातिय संघर्ष तथा परिवार वालों से, समाज से संघर्ष करनेवाली नारी का अंकन हुआ है।

आज समाज में नारी की सबसे भयानक तथा पीड़ादायी समस्या बलात्कार की हैं। उसी का उद्‌घाटन लेखक ने 'चार्ज-शीट' कहानी में 'कुसुम' के माध्यम से किया हैं।

'विधवा की समस्या', 'ड़ायन', 'माँ के आँसू' तथा 'जीवन दीप जलता रहे' आदि कहानियों में हुआ हैं। समाज के नियम विधवा के लिए बहुत कठोर हैं। वह विधवा को तपस्विनी के रूप में देखना चाहता है। विधवा की आकांक्षाएँ, इच्छाएँ समाज की दृष्टि से कोई मायने नहीं रखतीं। विधवा समस्या से समाज में अन्य समस्या निर्माण होती दिखाई देती हैं।

उपर्युक्त समस्याओं का चित्रण लेखक ने अपनी कहानियों में मार्मिकता से एवं संवेदनशीलता के साथ किया हैं। लेखक ने नारी के इन समस्याओं

का उद्‌घाटन अपनी कहानियों में किया हैं जिस पर आधुनिकता के नाम पर परदा ड़ाला जा रहा हैं।

4.6. सामाजिक समस्या :

समाज एक व्यापक परिक्षेत्र है, जिसमें विभिन्न विचारधाराएँ परिस्थिति एवं प्रसंगानुकूल निर्माण होती है। इन्हीं विचार धाराओं का प्रभाव समाज पर होता है समाज एक ऐसा केंद्र बिन्दु है जो एक ओर व्यक्ति-परिवार तथा उनकी मानसिकता को केन्द्रित रखता है तो दूसरी ओर उसके विस्तृत-व्यापक आयाम राष्ट्र की परिसीमाओं का संस्पर्श भी करते हैं। इस दृष्टिकोण से सामाजिक कथाकार व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को साथ लेकर चलता हैं। साधुराम दर्शक भी ऐसे कथाकार हैं जो समाज का पैनी दृष्टि से विवेचन करते है, उनकी समस्त कहानियों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण मिलता हैं - उदा. विविध वर्ग, जातिय समस्या, स्वभाव, संस्कार, सामाजिक स्थिति, नारी समस्या, पारिवारिक समस्या, धार्मिक समस्या, अंधःविश्वास की समस्या आदि। मनुष्य की सभी समस्याओं का समावेश सामाजिक समस्या में आता हैं।

विवेचित कहानीसंग्रह में अनेक सामाजिक समस्याओं का समावेश है उनका विवेचन निम्नलिखित है।

4.6.1 अंधविश्वास की समस्या :

भारतीय समाज में प्राचीन काल से अंधविश्वास की जड़े गहराई तक पहुँची हुई दिखाई आती है। आज इस वैज्ञानिक युग में भी अंधविश्वास का गहरा प्रभाव लोगों के मन पर विद्‌यमान हैं। डॉ.लक्ष्मण दत्त गौतम का मत है - ''सामाजिक रूढ़ियासें तथा धार्मिक रूढ़ियों की अपेक्षा अंधविश्वासों की नींव अधिक गहरी एवं मजबूत होती है।''[30] अर्थात धार्मिक रीति रिवाज तथा रूढ़ि परंपरा के कारण अंधविश्वास विविध प्रकार से बढ़ता हुआ दिखाई देता हैं। 'जीवन दीप जलता रहे' कहानी में अंधविश्वास की समस्या का उद्‌घाटन किया है। भागवती बेटे के खो जाने से बेटे के प्रेम में पागल हो उठती हैं और ''पीरों, फकीरों और ज्योतिषियों के घरों के चक्कर लगाने लगी।''[31] तभी एक नामी ज्योतिषी उसे

बताता हैं कि बीरू शत्रु के चंगुल से छूटने के लिए रोज तालाब के किनारे दिया जलाएँ रखना। भागवती ज्योतिषी की आज्ञा का पालन करते-करते पागल हो जाती है और आखिर बेटे की मौत की खबर सुनकर भी वह विश्वास नहीं कर पाती और हमेशा तालाब के किनारे दिया जलाती रहती हैं।

'मनहूस' कहानी में अंधविश्वास के कारण एक मासूम लड़के को दर-दर की ठोंकरे खाने के लिए विवश किया जाता हैं। 'मनहूस' का जन्म होते ही माता-पिता की मृत्यु हो जाती हैं। उसपर ''पंडित रामजी दास ने फतवा दिया, ''लडके के बारहवें शनि है, जो मित्रों की ओर शत्रु भाव से देख रहा है। जिसकी ओर वह प्यार से देखेगा, उसे विधाता भी नहीं बचा सकते।''[32] अर्थात गाँव में कोई 'मनहूस' को असली नाम से नहीं बुलाता और ना ही उसकी कोई मदद करता हैं। कुत्ते की तरह दर-दर भटकता हुआ मनहूस बड़ा होता है और गाँव में बाढ़ की समस्या निर्माण हो जाने पर जान पर खेल कर गाँववालों को बचाता हैं। जिस आदमी को देखने से शनि साढेसाती लोगों के पीछे लग जाती है। वही आदमी जब गाँववालों को बचाता हैं। तब ये शनि का ग्रह कहाँ जाता है? अर्थात अंधःविश्वास के कारण कई लोग अपनों के लाड़-प्यार, अपनापन एवं प्रेम से वंचित हो जाते हैं।

तात्पर्य -

1. अंधविश्वास से मनुष्य का जीवन नारकीय यातनाओं से भर जाता हैं।
2. अंधविश्वास एक सामाजिक समस्या है लेकिन उससे व्यक्ति-व्यक्ति में कटुता निर्माण होती दिखाई देती हैं।

4.6.2 धार्मिक समस्या :

भारतीय समाज में अनेक धर्मों का पालन किया जाता है। इसलिए भारत को धर्म सहिष्णुता का देश कहा जाता हैं। 'धर्म' शब्द का अर्थ है - धारण करनेवाला।.... धर्म वह है जो संपूर्ण विश्व को धारण करता है। प्रत्येक धर्म अपने-अपने तत्वों तथा नियमों से बद्ध हैं। मनुष्य को अनाचार से बचाकर सदाचार की, सत्य की राह दिखाकर जीवन को नियमित करके संकट को वहन करने की शक्ति देता हैं। लेकिन आज धर्म का परंपरागत रूप नहीं रहा बल्कि धर्म

के नाम पर असंतोष, विद्रोह, व्यक्त किया जाता है। धर्म के नाम पर सांप्रदायिक दंगें फसादों को फैलाकर व्यक्ति-व्यक्ति, समाज-समाज, राष्ट्र-राष्ट्र में असंतोष निर्माण करना आदि कुकृत्यों का जन्म होता दिखाई देता हैं।

'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार' कहानी में खारदीन की हाथ से बनी सेवईयाँ गुलाब इसलिए नहीं खा सकता है कि गुलाब एक ब्राम्हण का बेटा है और खारदीन मुसलमान हैं। गुलाब खारदीन से पूछता हैं - ''क्यों बाबा?'' आपके हाथ तो मेरी मां के हाथों से भी ज्यादा साफ है। आप रोज दो बार नहाते हैं, दिन में कितनी ही बार ईश्वर की प्रार्थना करते हैं।''[33] अर्थात आज भी समाज में धर्म के नाम पर छुआ-छूत की भावना को बढ़ावा दिया जाता है। आज समाज में सभी धर्म के लोग मिल-जुलकर रहने लगें है। लेकिन 'रोटी-बेटी' के व्यवहार खुले आम नहीं करते हैं। आज समाज में जो पढ़े-लिखें तथा आधुनिक विचारों के युवक-युवतियाँ आंतरजातीय विवाह करते हैं। उनकी ओर समाज आज भी घृणा की दृष्टि से देखता हैं।

'अतीत' कहानी में भारत-पाक विभाजन की तत्कालिन परिस्थिति को चित्रित किया है। 'नूरा' का परिवार जब पाकिस्तान जा रहा था तो रास्ते में 'नूरा' का अपहरण किया जाता हैं। इससे साफ पता चलता हैं कि धार्मिक दंगे फसादों में भी नारी को बख्शा नहीं जाता। उसमें वह बुरी तरह से पीस जाती है। उसे उपभोग का साधन मानकर उसे भगा ले जाने के कुकृत्य धर्म के नाम पर किए जाते है।

'कंकाल हँसता है' कहानी की संगीता नीच जाति के लड़के से प्रेम करती है जो उसके साथ पढ़ता है लेकिन शादी के लिए धर्म, जात एक होना जरूरी होता है। इसलिए उसके पिता संगीता के फैसले को ठुकराते हैं।

'जिन्दा-मुर्दा' तथा 'कितनी रात और' कहानियों में सांप्रदायिक झगड़े, दंग-फसादों में मारे गये मासूम लोगों का चित्रण किया है। धर्म के नाम पर एक इन्सान दूसरे इन्सान को जान से मारने की मनुष्य की हिंसक वृत्ति दिखाई देती हैं।

'पंछी-बाबा' कहानी में 'पंछी-बाबा की हत्या इसलिए की जाती है कि उन्होंने अपने बगीच में सभी धर्मों के लोगों को आश्रय दिया था और वे धर्म के नाम पर हत्या करने वालों से सख्त नफरत करते थे। आज समाज में धर्म के नाम पर अनेक समस्याओं का जन्म होता दिखाई देता है।

तात्पर्य -

1. धर्म के नाम पर समाज में दंगे फसाद फैलाकर अशांति निर्माण की जाती है।
2. धर्म के नाम पर होने वाले अनाचार, अत्याचार व भ्रष्टाचार की पोल खोली गयी है।

4.6.3 भ्रष्टाचार की समस्या :

स्वातंत्र्योत्तर काल में भ्रष्टाचार की समस्या बढ़ती हुई नजर आती है। साधारण-अबोध जनता का शोषण करनेवाले राजनीतिक नेता तथा उच्चवर्गीय लोगों की सहायता करने वाला एक मात्र पुलिस खाता हैं जिसके बलबुते पर राजनीतिक लोग मध्य तथा निम्न वर्ग का शोषण करते हैं। वास्तविकता यही है कि जनता के संरक्षण तथा भ्रष्टाचार पर नियंत्रण रखना, चोर, डाकू, जेब कतरे आदि से जनता का सरंक्षण करना आदि कार्य पुलिस वालों के होते हैं। लेकिन आज कल समाचार पत्रों में प्रतिदिन लोगों पर रिश्वतखोर पुलिस अन्याय-अत्याचार करती है उसकी खबरे छपती हैं। जिससे पूरा पुलिस-खाता भ्रष्टाचार के लिए बदनाम हुआ है।

'शाही खेल' कहानी में गुलजारी की माँ की हत्या राजनैतिक नेता के बेटे राजेन्द्र तथा उसके दोस्त शिकार करते हुए अनजाने में करते हैं। लेकिन पुलिस वाले गुलजारी को उसकी माँ की हत्या के इल्जाम में पकड़कर इतनी मार-पीट करती है कि जेल से छूटने पर गुलजारी की मौत हो जाती है। "....गुलजारी की माँ की मौत की किसी उच्च अधिकारी द्वारा जाँच के आदेश। (कुछ अर्से बाद किसी अधिकारी को अचानक ख्याल आया कि हो सकता है बुढ़िया मरी ही न हो,

क्यों कि लाश तो मिली ही नहीं थी। फिर जांच का क्या हुआ, किसी को कोई पता नहीं, सिवा सरकार के।)''[34] अर्थात भ्रष्टाचारी राजनीतिक नेता तथा भ्रष्टाचारी पुलिस मिलकर जनता का शोषण करते हैं।

तात्पर्य -

1. पुलिस झूठे अपराध के आरोप में निरीह मानव का शोषण करती हैं।
2. भ्रष्टाचारी राजनैतिक नेता तथा पुलिस की मिली भगत से किस तरह सामान्य जनता का शोषण किया जाता है, इसका पर्दा-फाश लेखक ने किया है।

4.6.4 शोषण की समस्या :

भारतीय समाज में वर्ण-व्यवस्था के कारण उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग में शोषक तथा शोषण की समस्या बढ़ने लगी है। अन्य वर्गों में भी संघर्ष दिखाई देता हैं। लेकिन ग्रामीण परिवेश में साहूकार, जमींदार आदि उच्चवर्गीय लोग मजदूर तथा निम्न जाति के लोगों पर अन्याय-अत्याचार करते हैं। उच्चवर्गीय समाज निम्नवर्गीय लोग उपेक्षा व तिरस्कार के पात्र होते है। उँच-नीच की भावना मनुष्य ने अपनी स्वार्थ-सिध्दि के लिए निर्माण की है।

'एक पोटली अनाज' कहानी में उच्चवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र बाबूराम निम्न वर्गीय पात्र करमा महर का शोषण करता है। कर्जे के बदले ताजा दूध देनेवाली भैंस लेने करमा महर के घर आता है। और उस पर पहले लिए हुए कर्जे का हिसाब लगाकर बाबूराम अपनी स्वाभाविक रौब तथा उँची आवाज में उसे कहता है - ''ओए यह क्या गल (बात) की तूने दूध की?'' ''क्या पहले रोज तुम्हारी घरवाली भागो छाछ नहीं ले जाती हमारे घर से? तुम्हारे घर परोहना (मेहमान) आने पर माँगने पर कभी दूध से इंकार किया है हमने?.... फिर अगर तुम्हें दूध की बहुत ही जरूरत है, तो हमारी भैंस खोलकर लाना या तुम्हें कोई सस्ती भैंस खरीद देंगे।''[35] अर्थात् यहाँ पर रोज थोडासा दूध माँगने पर एक दिन भैंस ही खोलकर ले जाने की बात करना यह कौनसी इन्सानियत है। यहाँ पर उच्चवर्गीय समाज के लोग अपना वर्चस्व दिखाकर, डरा-धमकाकर निम्नवर्गीय

लोगों का शोषण करने तथा उनकी मालमत्ता हथियाने का काम करते हैं। फिर भी ऋण के बोझ के तले करमा महर हमेशा दबा रहता है।

'पिशाच्च लीला' कहानी का बिरजू दलित पात्र है। वह अछूत है इसलिए बचपन में उसे स्कूल में अलग बिठाया जाता हैं छुआछुत के डर से मास्टरजी कभी उसे हाथ से नहीं मारते बल्कि दूसरे बच्चों से पीटवाते थे। बड़ा होने पर राजपूतों की परितक्त्या बहू को सहारा देने के लिए उससे विवाह करता है तो राजपूतों के लोग बिरजू के झोपड़ी में आग लगाते हैं और पति-पत्नी को मारकर उसी आग में फेंक देते हैं। आज इक्कसवी शती में भी ऐसी घटना घटित होती दिखाई देती है। एक इन्सान दूसरे इन्सान को इन्सान कहलाने के पक्ष में नहीं है, यह तो मानव जीवन की विडम्बना है।

तात्पर्य -

1. शोषक वर्ग अपने स्वार्थ सिध्दि के लिए कुछ भी कर सकते हैं।
2. ऋण के बोझ के तले दबे शोषित वर्ग तथा निम्न वर्ग का शोषण करके अपने घर भरने वाले शोषक वर्ग का अंकन किया हैं।
3. धर्म का पालन करनेवाले धर्माडम्बरवादी किसी का घर उजाड़कर ऐसे अपना धर्म कलंकित होने से बचाने की नाकाम कोशिश करते हैं जैसे क्रूर लोगों का चित्रण किया हैं।

निष्कर्ष -

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, इसलिए व्यक्ति व समाज से संबंधित उत्पन्न विविध सामाजिक समस्याओं से उसे जूझना पड़ता है। उन विविध समस्याओं में से अंधविश्वास की समस्या ने अनपढ़ तो क्या शिक्षित जन को भी ग्रस लिया है। व्यक्ति अपनी सोच को कुंठित करता है। इन्सानियत को समझ नहीं पाता - 'जीवन दीप जलता रहे' तथा 'मनहूस' कहानियों में इसका मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण हुआ हैं।

धार्मिक समस्या 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार', 'कंकाल हँसता हैं',

'अतीत', 'जिन्दा-मुर्दा', 'पंछी-बाबा' आदि कहानियों में धर्म के नाम पर होनेवाले दंगे फसादों का वास्तविकता से अंकन किया है।

भ्रष्टाचार की समस्या के अंतर्गत पुलिस या राजनैतिक नेताओं की मिलीभगत भ्रष्टाचार से सामान्य जनता का किस तरह शोषण होता है इसका यथार्थ चित्रण लेखक ने शाही खेल कहानी में किया है।

शोषण एवं 'एक पोटली अनाज' तथा 'पिशाच्च लीला' आदि कहानियों में छुआ-छुत की समस्या से लेकर रोटी-बेटी के व्यवहार तक की समस्या का उद्‌घाटन किया है।

समन्वित निष्कर्ष :

मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक समस्याओं का जाल बिछा हुआ है। समस्या को चित्र काव्य के सात भेदों में से एक पुराणकार ने माना है। इसे अंग्रेजी में प्रॉब्लेम कहा जाता हैं। 'मनुष्य की विषम परिस्थितियों' को समस्या कहा जाता हैं।

साधुराम दर्शक जी ने अपनी कहानियों में विविध समस्याओं का उद्‌घाटन किया है। व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्तर पर जिसमें भारतीय नारी, निम्नवर्ग और उनसे संदर्भित समस्या और समस्याओं द्‌वारा होनेवाले शोषण तथा परिणामों का उद्‌घाटन किया हैं, जिससे पाठक को कहानियों के पात्रों के प्रति सहानुभूति निर्माण होती है।

समाज में व्याप्त चरित्रहीनता, बेईमानी, अनैतिक कृत्य आदि के साथ पारिवारिक रिश्तों के बीच दरारें, नारी शोषण, अन्याय-अत्याचार, दहेज की समस्या से लेकर वेश्या व्यवसाय की समस्या तक का अंकन कहानियों में हुआ है। कहानीकार ने नारी जीवन की अन्यान्य समस्याओं की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया है।

विवाह एक पवित्र बंधन है। इसे आत्मिक तथा शारीरिक मिलन माना है। दुर्भाग्य से वर्तमान युग में विवाह के मूल उद्‌देश्य एवं संकल्पना पर विविध

समस्याओं का ग्रहण लग चुका है जैसे अनमेलविवाह, आंतरजातीय विवाह, पुनर्विवाह, कुप्रथा आदि समस्याओं ने समाज के सामने प्रश्नचिन्ह निर्माण किये है। इन्हीं समस्याओं में विशेष रूप से नारी का ही जीवन पुरूष की अपेक्षा अधिक पीड़ित एवं दयनीय बना हुआ दिखाई देता है। उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि नारी किसी भी क्षेत्र की समस्या से मुक्त नहीं है। नारी जीवन मुख्यतः विवाह समस्या से अधिक पीड़ित है। आज भी विवाह संबंधी कालबाहय रूढ़ि, परंपराओं से नारी जीवन विडम्बनाग्रस्त बना है।

जो न देखे रवि वह देखे कवि' इस उक्ति के अनुसार लेखक ने मानवजीवन संबंधी विविध समस्याओं का अंकन सूक्ष्मता से अपने कहानीजगत् में किया है। पाठकों को एवं समाज को अंतर्मुख होने की दृष्टि से सफल प्रयास किया है। जैसे :

1. अनमेल विवाह की समस्या 'खुशी भरा दिन', 'पर कटी तितली', तथा 'खलनायक' आदि कहानियों में मिलती हैं। ऐसे विवाह ज्यादातर आर्थिक कठिनाईयों के कारण होते हुए दिखाई देते है।

2. आंतरजातीय विवाह की समस्याओं का अंकन 'धारा बहती रही', 'कंकाल हँसता है' आदि कहानियों में हुआ है। इसमें नारी की विवशता को उद्घाटित किया हैं।

3. कुरूपता के कारण 'चन्द्रकिरण' कहानी में पुनर्विवाह की समस्या स्पष्ट हुई है। साथ ही 'पिशाच्च लीला' इस कहानी में समस्या दिखाई देती है।

4. कुप्रथा की समस्या 'समय के चरण' कहानी में दिखाई देती है।

5. आर्थिक समस्या, पारिवारिक समस्या के मूल में है। आर्थिक समस्या 'डायरी के कुछ पन्ने', 'साँपन' आदि कहानियों में निम्न तथा मध्य वर्ग की छोटी-छोटी इच्छाएँ सपनों को पूरा न होने की समस्या दिखाई देती हैं।

6. शहर तथा ग्रामीण प्रदेशों में आवास की समस्या का वास्तविक चित्रण 'एक वीतरागी के नोटस', 'लगे रहिए मंगतरामजी', 'दीवारें बोलती हैं' आदि

कहानियों में हुआ हैं।

7. दहेज की समस्या से ग्रस्त युवा लड़कियों का प्रतिनिधित्व 'एक वीतरागी के नोट्स' कहानी की निक्की करती हैं।

8. विधवा का भारतीय समाज में क्या स्थान है? इसका चित्रण 'ड़ायन', 'जीवन दीप जलता रहे', 'माँ के आँसू' आदि कहानियों में दिखाई देता है।

9. वेश्या जीवन की समस्या का चित्रण 'कंकाल' तथा पतिता कहानी में हुआ हैं।

10. सामाजिक समस्या के अंतर्गत अंधविश्वास की समस्या 'जीवन दीप जलता रहें','मनहूस' आदि कहानियों में दिखाई देती है।

11. धर्म के नाम पर दंगे फसादों को फैलाकर देश में अशांति निर्माण करके सामान्य जनता पर होनेवाले परिणामों का चित्रण 'अतीत', 'जिंदा-मुर्दा', 'पंछी-बाबा' आदि कहानियों में हुआ है।

12. भ्रष्टाचार की समस्या 'शाही-खेल' कहानी में चित्रित है। इसमें भ्रष्टाचारी पुलिस और नेताओं की मिली-भगत, काले कारणामों का तथा सामान्य जनता के शोषण आदि का चित्रण हुआ है।

13. 'पिशाच्च लीला' तथा 'एक पोटली अनाज' कहानी में शोषण का यथार्थ अंकन हुआ है।

संदर्भ सूची

1. डॉ.सीलन वेंकटेश्वर राव - यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन, पृ.24
2. डॉ.विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य से उध्दृत, पृ.9
3. डॉ.दया शंकर शुक्ल - हिंदी का समस्या पूर्ति काव्य, पृ.21
4. डॉ.सीलन वेंकटेश्वर राव - यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन, पृ.26
5. "Marriage is relation of one or more men and women which is recognised by custom or law, and involves certain rights and duties both in the case of the parties entering the union and in the case of children born of it."
   The History of human marriage - Westermarck, p.26
6. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही, पृ.99
7. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.142
8. वही, पृ.62
9. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही, पृ.3
10. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री, पृ.15
11. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही, पृ.77
12. वही, पृ.67
13. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.19
14. वही, पृ.88
15. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही, पृ.47
16. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.66
17. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही, पृ.28
18. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.21
19. वही, पृ.32
20. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही, पृ.65

21. प्रा.अर्जुन धरत - नागार्जुन के नारी पात्र, पृ.68
22. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही, पृ.73,74
23. डॉ.राम विलास शर्मा - प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, पृ.123
24. डॉ.मालती आदवानी - नवें दशक की हिंदी कहानियों में पारिवारिक संबंध, पृ.67
25. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.118
26. वही, पृ.47
27. डॉ.रक्षापुरी - प्रेमचंद के साहित्य में व्यक्ति और समाज, पृ.143
28. वही, पृ.143
29. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री, पृ.30
30. डॉ.हेमेंद्रकुमार पानेरी - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य संक्रमण, पृ.264
31. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही, पृ.71
32. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.119
33. वही, पृ.97
34. वही, पृ.76
35. वही, पृ.103

*****